पशुधन का अर्थशास्त्र : एक विश्लेषण

–नितिन प्रधान

भारत दुग्ध उत्पादन में विश्व में पहले, मत्स्य उत्पादन में दूसरे, अंडा उत्पादन में तीसरे और मांस उत्पादन में सातवें स्थान पर है। कृषि क्षेत्र से जहां हम मात्र 1–2 प्रतिशत वृद्धि दर प्राप्त कर रहे हैं वहीं पशुधन से 4–5 प्रतिशत। देश की कुल राष्ट्रीय आय का 10 प्रतिशत हिस्सा पशुधन से आता है। आंकड़ों से जाहिर है कि किसानों का आर्थिक सहारा होने के साथ–साथ पशुपालन का कारोबारी महत्व भी काफी अधिक है। दुग्ध उत्पादों से लेकर मांस के निर्यात में अपार संभावनाएं हैं। यही नहीं बल्कि लघु उद्योग के तौर पर भी पशुपालन को बढ़ावा दिए जाने की पहल की जा सकती है। तमाम संभावनाओं के बीच पशुधन का अर्थशास्त्र गड़बड़ा रहा है चूंकि इस दिशा में सबसे बड़ी खामी या कमी नीतिगत स्तर पर पशुधन के विकास के प्रयासों की हैं।

सरकार ने हाल ही में वित्तवर्ष 2016–17 की दूसरी तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद के अनुमान जारी किए थे। सरकार के इन आंकड़ों से जो सबसे ज्यादा चौंकाने वाली बात सामने आई वह यह कि कृषि क्षेत्र के कुल जीडीपी में पशुधन की हिस्सेदारी खेतीबाड़ी से अधिक हो गई है। खेतीबाड़ी से होने वाली आमदनी की हिस्सेदारी पचास फीसदी से भी नीचे चली गई है जबकि पशुधन से होने वाली कमाई का हिस्सा कृषि क्षेत्र की कुल आमदनी में 51 फीसदी हो गया है। यह बताता है कि किसानों की निर्भरता खेती की बजाय पशुपालन पर तेजी से बढ़ रही है। यानी किसानों को लगने लगा है कि पशुपालन के जरिए उनकी आमदनी ज्यादा तेज रफ्तार से बढ़ सकती है।

ऐसा होने की एक मूल वजह यह है कि बीते कुछ वर्षों में खेती करने की लागत ज्यादा तेजी से बढ़ी है। साथ ही खेतीबाड़ी में बारिश की स्थिति, कृषि उत्पादों की कीमत में उतार–चढ़ाव जैसे जोखिम भी इधर तेजी से बढ़े हैं जबकि पशुपालन में ऐसा जोखिम काफी कम है। संभवतः यही वजह है कि पशुधन की महत्ता बढ़ी है और सहायक व्यवसाय के तौर पर किया जाने वाला पशुपालन अब पूरे तौर पर अलग व्यवसाय का रूप लेता जा रहा है यानी देश की अर्थव्यवस्था में अब पशुपालन का महत्व बढ़ रहा है।

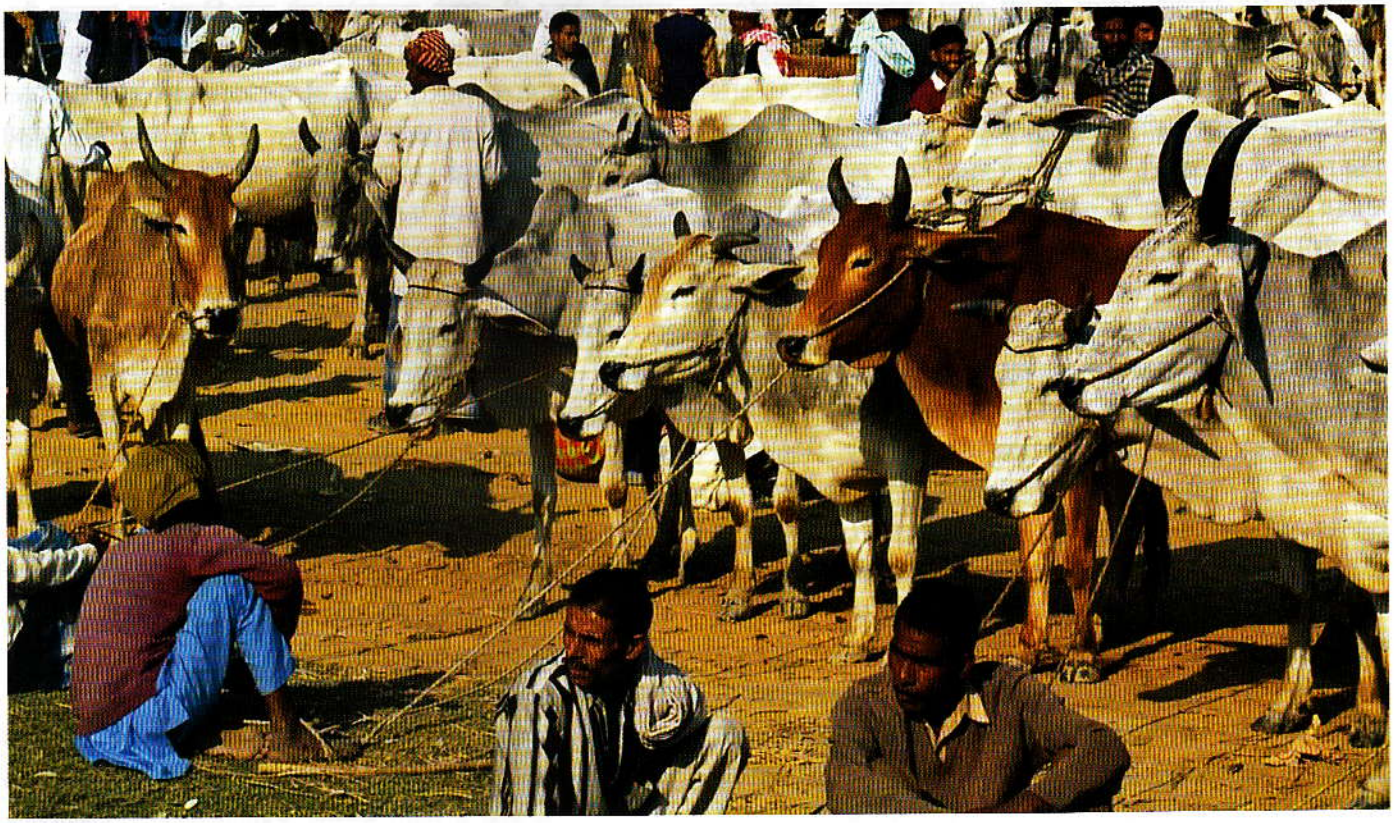

भले ही कृषि अर्थव्यवस्था में पशुपालन की हिस्सेदारी ने बढ़त बना ली है। लेकिन अभी भी इसका अर्थशास्त्र उतना सरल नहीं है। हम अक्सर खाद्य उत्पादों की कीमतों को लेकर चिंता व्यक्त करते हैं। कृषि की लागत बढ़ने के लिए खाद से लेकर बीज की कीमतों में वृद्धि पर चर्चाएं होती हैं। अर्थव्यवस्था के विकास को लेकर होने वाली किसी भी बहस में आमतौर पर इन मुद्दों पर प्रमुखता से चर्चा होती है। लेकिन पशुपालन के क्षेत्र में आ रही दिक्कतों, उनके शोध की धीमी रफ्तार, चारे की बढ़ती कीमत, पशुओं के इलाज की सुविधाओं और अन्य देशों के मुकाबले पशुओं की उत्पादकता सार्वजनिक बहस का हिस्सा नहीं बनते। जबकि आंकड़े स्पष्ट कर रहे हैं कि कृषि क्षेत्र की आमदनी में पशुपालन से होने वाली आमदनी अब खेतीबाड़ी पर हावी हो रही है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि एवं पशुपालन का हमेशा से विशेष महत्व रहा है। आंकड़ों के हिसाब से देखें तो पूरी दुनिया में कुल गायों की आबादी की 15 प्रतिशत भारत में हैं जबकि भैंसें 55 प्रतिशत हैं। देश के कुल दुग्ध उत्पादन का 53 प्रतिशत भैंसों व 43 प्रतिशत गायों से प्राप्त होता है। गायों और भैंसों की इस संख्या की बदौलत भारत लगभग 1465 लाख टन दुग्ध उत्पादन करके विश्व में पहले स्थान पर है।

गाय और भैंस ही नहीं छोटे, भूमिहीन तथा सीमांत किसान की तो पूरी अर्थव्यवस्था छोटे पशुओं जैसे भेड़–बकरियां, सूअर एवं मुर्गीपालन पर टिकी है। शायद यही वजह है कि दुनिया में बकरियों की कुल संख्या के मामले में भारत का स्थान दूसरा है। साथ ही भेड़ों की संख्या में भारत तीसरे और कुक्कुट संख्या में सातवें स्थान पर है। कम खर्चे में, कम स्थान एवं कम मेहनत से ज्यादा मुनाफा अर्जित करने की दिशा में छोटे पशुओं का योगदान अहम है। यदि सरकार की तरफ से इन पशुओं के पालन से संबंधित नवीनतम तकनीकियों का व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाए तो निःसंदेह ये छोटे पशु गरीबों के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

देश की लगभग 70 प्रतिशत आबादी कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर है। छोटे व सीमांत किसानों के पास कुल कृषि भूमि की 30 प्रतिशत जोत है। इसमें 70 प्रतिशत कृषक पशुपालन व्यवसाय से जुड़े हैं जिनके पास कुल पशुधन का 80 प्रतिशत भाग मौजूद है। स्पष्ट है कि देश का अधिकांश पशुधन आर्थिक रूप से निर्बल वर्ग के पास है। भारत में लगभग 19.91 करोड़ गाय, 10.53 करोड़ भैंस, 14.55 करोड़ बकरी, 7.61 करोड़ भेड़, 1.11 करोड़ सूअर तथा 68.88 करोड़ मुर्गी का पालन किया जा रहा है। दूध के बाद अंडा उत्पादन में 53200 करोड़ के साथ भारत विश्व में तृतीय तथा मांस उत्पादन में सातवें स्थान पर है। यही कारण है कि कृषि क्षेत्र में जहां हम मात्र 1–2 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर प्राप्त कर रहे हैं वहीं पशुपालन से 4–5 प्रतिशत।

दुधारू और अंडा, मांस देने वाले पशुओं के साथ–साथ कृषि क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में बैलों की उपयोगिता भी काफी अधिक है। पशुओं की पिछली गणना के आंकड़ों से स्पष्ट है कि पशुधन में अव्वल बैलों से जुताई के साथ सामान की ढुलाई, सिंचाई और खेती के अन्य कार्यों में इसकी उपयोगिता बढ़ रही है। पिछले दशकों में खेती में मशीनों के बढ़ते उपयोग के चलते बैलों एवं भैंसों की उपयोगिता घटकर न्यूनतम हो गई थी। लेकिन पशुगणना के ताजा आंकड़ों ने खेती की बदलती सूरत दिखाकर नीति नियामकों को हैरत में डाल दिया है।

भारत की कुल राष्ट्रीय आय का दस फीसदी हिस्सा पशुधन से आता है। इसलिए पहली पंचवर्षीय योजना से ही पशुधन विकास के लिए बजटीय प्रावधान रखा गया था। पशुधन के राष्ट्रीय महत्व को ध्यान में रखते हुए पशुधन के विकास के लिए प्रथम पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत आठ करोड़ रुपये की राशि रखी गई थी। समय के साथ इस राशि में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई। वर्तमान संदर्भ में अगर देखें तो वर्ष 2010–11 में पशुधन एवं दुग्ध विकास के लिए केन्द्र की तरफ से 1104 करोड़ रुपये और वर्ष 2011–12 में 1243 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। हालांकि ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में पशुधन विकास दर का लक्ष्य छह से आठ फीसदी रखा गया था लेकिन तय लक्ष्य तक नहीं पहुंचा जा सका और पशुधन विकास दर 4.8 फीसदी ही हासिल हो सकी। लिहाजा बारहवीं पंचवर्षीय योजना में ऐसे प्रयास किए जा रहे हैं कि पशुधन विकास दर के पूर्व लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। इस दिशा में सरकारों द्वारा पशुधन विकास के लिए उपयोगी साबित होने वाली कई नीतियों पर काम किए जाने का प्रावधान है।

किसानों का आर्थिक सहारा बनने के साथ–साथ पशुधन का कारोबारी महत्व भी काफी अधिक है। दुग्ध उत्पादों से लेकर मांस के निर्यात की संभावनाएं दुनिया भर के बाजारों में विद्यमान हैं। देश से 2010–11 में 25408 करोड़ रुपये का निर्यात किया गया। देश में अगर पशुधन के व्यापारिक महत्व को समुचित तरीके से प्रचारित और प्रोत्साहित किया जाए तो निर्यात का यह आंकड़ा कई गुना बढ़ सकता है। इतना ही नहीं बल्कि लघु उद्योग के तौर पर भी एक नई पहल साबित हो सकती है।

पशुधन का महत्व केवल दूध, मांस, अंडा जैसे उत्पादों तक ही सीमित नहीं है। इसके विपरीत ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुधन की भूमिका कई अन्य वजहों से भी महत्वपूर्ण है। पशुओं से जहां खाद प्राप्त होती है वहीं दूसरी तरफ उनके सींग, खुर व रेशे और चमड़े आदि का इस्तेमाल कई तरह से किया

जाता रहा है। यहां तक कि ग्रामीण क्षेत्रों में चल रही लगभग डेढ़ करोड़ बैलगाड़ियां भी ग्रामीण यातायात में अहम योगदान कर रही हैं। दुधारू पशुओं के साथ–साथ कृषि क्षेत्र में मत्स्य पालन का भी काफी महत्व है और बड़ी संख्या में किसान इससे लाभान्वित हो रहे हैं। अब तो यह पूरी तरह से एक व्यवसाय में तब्दील होता जा रहा है। इसी तरह रोजमर्रा की जिंदगी में शहद के बढ़ते प्रचलन ने किसानों को मधुमक्खी पालन के लिए भी प्रोत्साहित किया है जो किसानों की आमदनी बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रहा है।

यह तो जगजाहिर है कि देश के कुल पशुधन में दुधारू नस्लों के पशुओं की हिस्सेदारी सर्वाधिक है। इस नजरिए से दुग्ध उत्पादन के हर मामले में भारत को आगे होना चाहिए। लेकिन इस संबंध में आंकड़े बिल्कुल उलट हैं। विश्व के अव्वल दर्जे का पशुधन संपन्न देश होने के बावजूद हमारे पास या तो अच्छी नस्ल के दुधारू पशु नहीं हैं या होने के बावजूद हम दुग्ध उत्पादन में अपेक्षित रफ्तार से वृद्धि नहीं कर पा रहे हैं। **सरकारी आंकड़ों के मुताबिक सालाना प्रति गाय से औसतन करीब 1108 किलो और प्रति भैंस से 1531 किलो दूध का उत्पादन होता है। जबकि अमेरिका जैसे विकसित देशों में तो अच्छी नस्ल की गाय प्रति वर्ष करीब 6000 लीटर दूध देती है।**

इस दिशा में सबसे बड़ी खामी नीतिगत स्तर पर पशुधन के विकास के प्रयासों की है। उन्नत किस्म की नस्लों के विकास के साथ–साथ गाय, भैंस जैसे दुधारू पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने के काम सरकार की प्राथमिकता में नहीं हैं। इसी तरह सबसे बड़ी कमी पशुओं के स्वास्थ्य की एक व्यापक और उन्नत पद्धति तैयार करने की है। किसानों में तो जागरूकता का अभाव है ही, लेकिन पशुओं की चिकित्सा के लिए केंद्रों की उपलब्धता भी बड़ी समस्या है। छोटे और सीमांत किसानों के लिए यह समस्या और विकट हो जाती है क्योंकि उनके पास पशुओं के लिए इलाज का एकमात्र सहारा सरकारी चिकित्सा केंद्र ही हैं।

इन सबके बावजूद पशुधन आज की तारीख में किसानों की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार बनता जा रहा है। लेकिन इसके विकास में मददगार साबित हो सकने वाले क्षेत्रों में काम नहीं होने के चलते पशुधन का अर्थशास्त्र बिगड़ रहा है। **पशुओं के लिए चारा उपलब्ध कराना आज भी किसानों के लिए बड़ी चुनौती साबित हो रहा है। पौष्टिक चारे की देश में कमी के चलते इसकी कीमतें लगातार बढ़ रही हैं।** ऐसे में पशुपालक के लिए जानवरों को पौष्टिक चारा उपलब्ध कराना मुश्किल हो रहा है। इसका असर पशुओं की उत्पादकता पर पड़ रहा है। योजना आयोग के आंकड़ों पर भरोसा करें तो देश में केवल पांच प्रतिशत कृषि भूमि ही चारे के उत्पादन के लिए इस्तेमाल होती है। फलस्वरूप भारत सूखे चारे के मामले में 11, हरे और ताजा चारे के मामले में 35 और पौष्टिक व मिश्रित चारे के मामले में 28 फीसदी कमी का सामना कर रहा है।

पशुपालन से जुड़ी पूरी अर्थव्यवस्था इन परेशानियों से निजात मिलने का इंतजार कर रही है। साथ ही पशुधन का अधिकाधिक लाभ लेने के लिए जरूरी है कि देश में इससे जुड़े उद्योगों का विकास भी तेजी से हो। दुग्ध उत्पादन का लाभ लेने के लिए डेयरी उद्योग का विकास मददगार साबित हो रहा है। लेकिन यह जरूरी है कि इस उद्योग को किसानों की पशुओं से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए भी आगे आना होगा। वह चाहे फिर पशुओं के स्वास्थ्य से संबंधित हो या फिर उनकी नस्ल को उन्नत बनाने के लिए। इसके बिना देश में उन्नत पशुधन की रफ्तार बढ़ाना बेहद मुश्किल होगा।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं। आर्थिक और वित्तीय विषयों पर लिखते हैं। वर्तमन में दैनिक जागरण में राष्ट्रीय ब्यूरो चीफ हैं।)

ई–मेल : pradhnitin@gmail.com